

संस्कृत कैसे सीखें?

कारक (भाग 1)

How to Learn Sanskrit?

Kaarak (Part 1)

आकृति ठाकुर¹ एवं योगेश शर्मा²

Aakriti Thakur¹ and Yogesh Sharma²

¹शोधच्छात्रा, संस्कृत, दर्शन एवं वैदिक अध्ययन विभाग, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान

²सह आचार्य, कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

aakritithakur2@gmail.com¹, ycsharma2000@yahoo.co.in²

<https://doi.org/10.5281/zenodo.21817871>

संस्कृत कैसे सीखें ? प्रकल्प में अब तक संस्कृत वर्ण-व्यवस्था, सुबन्त, तिङन्त, कृदन्त, तद्धितान्त, स्त्र्यन्त, समास आदि पद-विश्लेषणात्मक विवेचन किया जा चुका है। अतः अब वर्ण और पद से आगे वाक्य की प्रक्रिया को समझने हेतु कारक-विधान का प्रतिपादन किया जा रहा है। 'क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्', अर्थात् क्रिया का जो जनक हो, जिससे कार्य सम्पन्न हो उसे कारक कहते हैं। कारक की एक और परिभाषा है – 'क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्', अर्थात् क्रिया का साक्षात् अन्वय जिसके साथ हो उसे कारक कहते हैं। कारक शब्द का अर्थ है – क्रिया से सम्बन्ध रखने वाला, अर्थात् क्रिया का जिसमें अन्वय हो अथवा क्रिया का जो जनक है, वह कारक कहलाता है। तात्पर्य यह है क्रिया की निष्पत्ति में जो निमित्त होता है, उसे कारक कहते हैं। संस्कृत व्याकरण के अनुसार, कारक छः होते हैं – कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण।

कर्ता कर्म च करणञ्च सम्प्रदानं तथैव च।

अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ।।

उदाहरण – हे मित्र! साधुजनानां रक्षणाय कृष्णः भवनात् अवतीर्य राजसभायाम् मुष्टिकया कंसं हतवान्।

(अर्थ – हे मित्र ! सज्जनों की रक्षा के लिए कृष्ण ने भवन से नीचे उतरकर राजसभा में मुक्के से कंस को मार दिया।)

क्रम सं.	भूमिका	कारक	उदाहरण
1.	क्रिया को करने वाला	कर्ता	कृष्णः (कृष्ण ने)
2.	क्रिया का कर्म	कर्म	कंसम् (कंस को)
3.	क्रिया का सम्पादन जिसके द्वारा होता है	करण	मुष्टिकया (मुक्के से)
4.	क्रिया जिसके लिए होती है	सम्प्रदान	रक्षणाय (रक्षा के लिए)
5.	क्रिया से उत्पन्न पृथक्ता का आश्रय	अपादान	भवनात् (भवन से)
6.	क्रिया जिस स्थान पर हो वह	अधिकरण	राजसभायाम् (राजसभा में)

7.	साधुजनानां (सज्जनों की) सम्बन्ध होने के कारण विभक्ति है, कारक नहीं।
8.	हे मित्र! सम्बोधन है, कारक नहीं।
9.	यहाँ क्रिया हतवान् (मार दिया) है।

उपर्युक्त इस उदाहरण में सभी छः कारकों का प्रयोग हुआ है, जिन्हें सारणी के माध्यम से व्यवस्थित कर स्पष्ट किया गया है। इन कारकों के चिह्नों को विभक्ति कहते हैं। अतः सिद्धान्तकौमुदी में इसे 'विभक्ति प्रकरण' कहा गया है। स्वौजसमौट् इत्यादि सूत्र द्वारा प्रथमा द्वितीया आदि विभक्ति का निर्धारण किया गया है, लेकिन प्रथमा आदि विभक्ति किस अर्थ में हो, इसका विधान इस प्रकरण में किया गया है। अतः विभक्ति के अर्थ बताने के कारण 'कारक प्रकरण' को 'विभक्त्यर्थ प्रकरण' भी कहते हैं। विभक्ति का प्रतिपादन दो रूपों में किया गया है – उपपद विभक्ति एवं कारक विभक्ति के रूप में। किसी पद विशेष को उद्देश्य कर की जाने वाली विभक्ति को उपपद विभक्ति एवं कारक को उद्देश्य कर की जाने वाली विभक्ति को कारक विभक्ति कहते हैं। सु, औ, जस् आदि सात विभक्तियाँ हैं।

कर्ता कारक – प्रथमा विभक्ति

प्रातिपदिकार्थमात्र में, लिङ्गमात्र आदि की अधिकता में, परिमाणमात्र में एवं वचनमात्र में प्रथमा विभक्ति होती है। प्रातिपदिकार्थ का अर्थ है – निश्चित (स्वाभाविक) रूप से शब्द से स्वतः प्राप्त अर्थ।

प्रातिपदिकार्थ पद से यहाँ अलिङ्ग (जिसका किसी लिङ्ग में प्रयोग नहीं हो) और नियत लिङ्ग (जिसका निश्चित लिङ्ग हो) का ग्रहण है। अलिङ्ग का उदाहरण है – उच्चैः नीचैः तथा नियत लिङ्ग के उदाहरण हैं – कृष्णः (पुलिङ्ग), श्रीः (स्त्रीलिङ्ग) एवं ज्ञानम् (नपुंसकलिङ्ग)। यहाँ उच्चैः नीचैः में कोई लिङ्ग नहीं और कृष्ण आदि में नियत लिङ्ग है, अतः इन सब में प्रातिपदिकार्थ मात्र में प्रथमा है।

लिङ्गमात्र का उदाहरण है – तटः, तटी, तटम्। यहाँ प्रातिपदिकार्थ से अतिरिक्त लिङ्ग की अधिकता

है, क्योंकि एक ही शब्द में भिन्न-भिन्न लिङ्ग का बोध होता है। अतः लिङ्ग की अधिकता में प्रथमा विभक्ति होती है।

परिमाण का उदाहरण है – द्रोणो ब्रीहिः। यहाँ 'द्रोण' माप अर्थ अधिक होने से परिमाणमात्र में प्रथमा होती है।

वचन का उदाहरण है – एकः, द्वौ, बहवः।

सम्बोधन

सम्बोधन अर्थ में भी प्रथमा होती है। जैसे – हे राम! दूर में स्थित को अपनी ओर उन्मुख करने को सम्बोधन कहते हैं। इस अर्थ में प्रयुक्त (जिसके लिए प्रयोग किया जाय) शब्द से सम्बोधन की विवक्षा (कहने की इच्छा) में प्रथमा विभक्ति होती है।

प्रथमा विभक्ति मुख्यतः दो परिस्थितियों में होती है, जो निम्नलिखित हैं –

1. जो क्रिया के करने में स्वतन्त्र होता है, उसे कर्ता कहा जाता है। उक्त कर्ता में प्रथमा विभक्ति आती है।

जैसे – रामः पठति। (राम पढ़ता है।)

यहाँ पठन क्रिया को करने वाला राम है। अतः वह कर्ता है और उसमें प्रथमा विभक्ति है।

2. कर्मवाच्य के अन्तर्गत, कर्म में प्रथमा विभक्ति होती है।

जैसे – त्वया ग्रन्थः पठ्यते। (तुम्हारे द्वारा ग्रन्थ पढ़ा जाता है।)

यहाँ वाक्य में ग्रन्थ रूप कर्म की प्रधानता है, अतः ग्रन्थ में प्रथमा विभक्ति है।

कर्मकारक – द्वितीय विभक्ति

कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसको प्राप्त करना चाहता है अथवा कर्ता का क्रिया से द्वारा जो अत्यन्त ईप्सित (इच्छित) हो, उनकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे – हरि भजति। (हरि को भजता है।) यहाँ भजन क्रिया के द्वारा कर्ता का ईप्सित हरि है, अर्थात् हरि को उद्देश्य करके भजन क्रिया हो रही है। अतः हरि की कर्मसंज्ञा तथा कर्म संज्ञक में 'कर्मणि द्वितीया' सूत्र से द्वितीया विभक्ति होने से 'हरिम्' यह प्रयोग हुआ है।

ध्यातव्य है कि कर्ता के लिए ईप्सित कहने से 'माषेषु अश्वं बध्नाति' में माष की कर्मसंज्ञा नहीं होती, क्योंकि कर्ता के लिए 'बध्नाति' क्रिया द्वारा 'माष' ईप्सित नहीं है। 'कर्ता का ईप्सित हो', ऐसा नहीं कहने पर किसी के भी ईप्सित की कर्म संज्ञा प्राप्त होने से अश्व के ईप्सित होने से माष की कर्मसंज्ञा होने लगती, क्योंकि अश्व का ईप्सित माष है।

इसी प्रकार सूत्र में ईप्सितमम् कहने से 'पयसा ओदनं भुङ्क्ते', यहाँ भुजिं क्रिया के प्रति पयस् के ईप्सित होने से कर्म संज्ञा होने लगती, किन्तु पयस् यहाँ ईप्सितमम् नहीं है। कर्म कारक के अन्य उदाहरण हैं –

- सः पुस्तकं पठति। (वह पुस्तक पढ़ता है।)
- सः रामं पश्यति। (वह राम को देखता है।)
- ते प्रश्नं पृच्छन्ति। (वे प्रश्न पूछते हैं।)

इस प्रकार व्याकरण में कतिपय स्थितियों में कर्म कारक एवं इसके अनुसार द्वितीया विभक्ति का विधान किया गया है। ये स्थितियाँ निम्नलिखित हैं –

अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे— हरि भजति। (हरि को भजता है।), किन्तु हरिः सेव्यते (हरि सेवित हैं।), यहाँ हरि के उक्त होने से इसमें द्वितीया विभक्ति नहीं है।

कर्ता द्वारा अत्यधिक ईप्सित के समान ही जब अनीप्सित वस्तु भी क्रिया से युक्त हो, तो उसकी भी कर्म संज्ञा होती है। जैसे – ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति।

(गाँव को जाता हुआ तृण को छूता है।)

यहाँ ग्राम मुख्य कर्म है और तृण अनीप्सित कर्म है। अतः ग्रामं और तृण, दोनों में द्वितीया विभक्ति है।

इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण है – ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते। (भात खाता हुआ विष खा लेता है।)

यहाँ ओदनं ईप्सित कर्म है और विषं अनीप्सित कर्म है। अतः दोनों में द्वितीया विभक्ति है।

ईप्सिततम् (ईप्सित) कर्म तीन प्रकार के हैं – (1) निर्वर्त्य, (2) विकार्य और (3) प्राप्य। ईप्सितमम् से अन्य कर्म चार प्रकार के हैं – (1) उदासीन भाव से प्राप्य, (2) अनीप्सित, (3) संज्ञान्तर से अनाख्यात, (4) अन्यपूर्वक। क्रमशः उदाहरण हैं –

1. घटं करोति। (निर्वर्त्य)
2. सुवर्णभस्मं करोति। (विकार्य)
3. रामः ग्रामं गच्छति। (प्राप्य)
4. ग्रामं गच्छन् तृणं स्पृशति। (उदासीन भाव)
5. ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते। (द्वेष्य)
6. गां दोग्धि पयः। (संज्ञान्तर से अनाख्यात अकथित)
7. हरिः वैकुण्ठम् अधिशेते। (अन्यपूर्वक)

इसी शृंखला में, अकथित अर्थात् अविवक्षित की कर्मसंज्ञा होती है। यहाँ यह समझना चाहिए कि अपादान, सम्प्रदान, अधिकरण, कर्म, करण, कर्ता और हेतु – इन सातों के द्वारा जो अविवक्षित हों अर्थात् जिसे कहा न गया हो। इन कारकों के द्वारा अविवक्षित होने पर क्रिया के साथ सम्बन्ध होते हुए इसकी कर्मसंज्ञा होती है। यहाँ विधीयमान कर्म मुख्य कर्म से युक्त होता है। अतः ऐसे वाक्य में एक मुख्य कर्म एवं एक गौण कर्म होने से क्रिया द्विकर्मक कहलाती है।

ये द्विकर्मक अकथित धातु निम्नलिखित हैं—

दुह् याच् पच् दण्ड् रुधि प्रच्छि चि ब्रू शासु जि मथ् मुषाम् ।

कर्मयुक्स्यादकथितं तथा स्यान्नीहकृष्वहाम् ॥

क्रम सं.	द्विकर्मक धातु	उदाहरण	मुख्य कर्म	अविवक्षित कर्म
1.	दुह्	गां दोग्धि पयः (गाय से दूध दुहता है।)	गो	पयः (अपादान की अविवक्षा)
2.	याच्	बलिं याचते वसुधाम् (बलि से पृथ्वी माँगता है।)	वसुधा	बलिम् (अपादान की अविवक्षा)
3.	याच्	अविनीतं विनयं याचते (अशिष्ट से विनय की प्रार्थना करता है।)	विनयम्	अविनीतम् (सम्प्रदान की अविवक्षा)
4.	पच्	तण्डुलानोदनं पचति (चावलों से भात पकाता है।)	ओदनम्	तण्डुलम् (करण की अविवक्षा)
5.	दण्ड्	गर्गान् शतं दण्डयति (गर्गों को सौ रुपये दण्ड करता है।)	शतम्	गर्गान् (अपादान की अविवक्षा)
6.	रुध्	व्रजम् अवरूणद्धि गाम् (गाय को बाड़े में रोकता है।)	गाम्	वज्रम् (अधिकरण की अविवक्षा)
7.	प्रच्छ्	माणवकं पन्थानं पृच्छति (छात्र से रास्ता पूछता है।)	पन्थानम्	माणवकम् (करण की अविवक्षा)
8.	चि	वृक्षम् अवचिनोति फलानि (वृक्ष से फलों को चुनता है।)	फलानि	वृक्षम् (अपादान की अविवक्षा)
9.	ब्रू / शास्	माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा (छात्र को धर्म कहता है या उपदेश देता है।)	धर्मम्	माणवकम् (सम्प्रदान की अविवक्षा)
10.	जि	शतं जयति देवदत्तम् (देवदत्त से सौ रुपये जीतता है।)	शतम्	देवदत्तम् (अपादान की अविवक्षा)
11.	मथ्	सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति (समुद्र से सुधा को मथता है।)	क्षीरनिधिम्	सुधाम् (अपादान की अविवक्षा)
12.	मुष्	देवदत्तं शतं मुष्णाति (देवदत्त से सौ रुपये चुराता है।)	शतम्	देवदत्तम् (अपादान की अविवक्षा)
13.	नी	ग्रामम् अजां नयति (गाँव में बकरी को ले जाता है।)	अजाम्	ग्रामम् (अधिकरण की अविवक्षा)
14.	हृ	ग्रामम् अजां हरति (गाँव में बकरी को हरता है।)	अजाम्	ग्रामम् (अधिकरण की अविवक्षा)
15.	कृष्	ग्रामम् अजां कर्षति (गाँव में बकरी को खींचता है।)	अजाम्	ग्रामम् (अधिकरण की अविवक्षा)
16.	वह्	ग्रामम् अजां वहति (गाँव में बकरी को ढोता है।)	अजाम्	ग्रामम् (अधिकरण की अविवक्षा)

नोट — यह कर्मसंज्ञा अर्थ निबन्धन है। अतः इन अर्थवाचक धातुओं के प्रयोग में भी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे—

- बलिं भिक्षते वसुधाम्।
(बलि से पृथ्वी माँगता है।)
- माणवकं धर्मं भाषते।
(बालक को धर्म का उपदेश देता है।)
- माणवकस्य पितरं पन्थानं पृच्छति।
(बालक के पिता से रास्ता पूछता है।)

अकर्मक धातुओं के प्रयोग में देशवाचक, कालवाचक, भाववाचक, गन्तव्यमार्गवाचक शब्द की कर्मसंज्ञा कहनी चाहिये यह वार्तिकार्थ है। जैसे—

- देशवाचक का उदाहरण — कुरुन् स्वपिति।
(कुरु देश में सोता है।)

यहाँ स्वप् धातु अकर्मक के साथ देशवाचक कुरु शब्द में द्वितीया हुई है, अन्यथा अधिकरण होने में सप्तमी होती। इसी प्रकार—

- कालवाचक का उदाहरण — मासम् आस्ते।
(मासभर रहता है।)
- भाववाचक का उदाहरण — गोदोहम् आस्ते।
(गाय दुहने के समय रहता है।)
- गन्तव्यवाचक मार्ग का उदाहरण — क्रोशम् आस्ते। (एक कोसभर है।)

अधि उपसर्गपूर्वक 'शीङ्', 'स्था' और 'आस्' धातु के प्रयोग में इनका जो आधार अर्थात् जहाँ सोया जाए, जहाँ ठहरा जाए और जहाँ बैठा जाए, उसकी कर्मसंज्ञा होती है। जैसे—

- अधिशेते अधितिष्ठति अध्यास्ते वा वैकुण्ठं हरिः।
(हरि वैकुण्ठ में शयन करते हैं, ठहरते हैं, बैठते हैं)

यहाँ हरि के शयन का, ठहरने का, बैठने का आधार वैकुण्ठ की कर्मसंज्ञा और द्वितीया विभक्ति होकर 'वैकुण्ठं' प्रयोग बना है।

- नृपः सिंहासनम् अधितिष्ठति।
(राजा सिंहासन पर बैठता है।)

- बालकः आसन्दिकाम् अधितिष्ठति।
(बालक कुर्सी पर बैठता है।)
- भूपतिः सिंहासनम् अध्यास्ते।
(राजा सिंहासन पर बैठता है।)

'अभि', 'नि', इन दोनों उपसर्गों के एक साथ 'विश्' धातु के साथ प्रयोग होने पर जहाँ प्रवेश किया जाए अथवा जिस पर चला जाए, इस आधार की कर्मसंज्ञा होती है तथा कर्मसंज्ञा होने से उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

- अभिनिविशते सन्मार्गम्।
(सन्मार्ग पर चलता है।)

यहाँ अभिनि का 'विश्' धातु के साथ प्रयोग होने से सन्मार्ग में द्वितीया विभक्ति होती है।

'उप', 'अनु', 'अधि' एवं 'आङ्', इन उपसर्गों के साथ 'वस्' धातु के प्रयोग में वसने (निवास करने) का जो आधार अर्थात् जहाँ निवास किया जाए, तद्वाचक शब्द में आधार अर्थ में कर्मसंज्ञा होती है। जैसे—

- उपवसति/अनुवसति/अधिवसति/आवसति
वैकुण्ठं हरिः।
(हरि वैकुण्ठ में निवास करते हैं।)

यहाँ हरि के निवास के आधार 'वैकुण्ठ' की कर्मसंज्ञा एवं द्वितीया विभक्ति होकर 'वैकुण्ठं' प्रयोग बना है। अन्यथा वैकुण्ठ के आधार होने से सप्तमी विभक्ति में 'वैकुण्ठे' प्रयोग होने लगता है। ध्यातव्य है कि 'उप' उपसर्गपूर्वक 'वस्' धातु का अर्थ 'उपवास करना' होने पर द्वितीया नहीं होती है। जैसे— वने उपवसति (वन में उपवास करता है)। यहाँ आधार में सप्तमी विभक्ति ही हुई है।

अभितः (दोनों ओर), परितः (चारों ओर), समया, निकषा (पास—समीप), हा (कष्टसूचक शब्द), प्रति (ओर)— इन पदों के प्रयोग में जिसके दोनों ओर, जिसके चारों ओर, जिसके पास, जिसके प्रति कष्ट व्यक्त की जाए, जिसकी ओर अर्थ बोध करना हो, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

- अभितः कृष्णम्। (कृष्ण के दोनों ओर)
- परितः कृष्णम्। (कृष्ण के सभी ओर)
- ग्रामं समया। (ग्राम के समीप)
- निकषा लङ्काम्। (लंका के पास)
- हा कृष्णाभक्तम्। (कृष्ण के अभक्त के लिए खेद)

अन्तरा (मध्य), अन्तरेण (विना, छोड़कर) इन पदों के प्रयोग में जिसके बिना अर्थबोध करना हो, उसमें द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

अन्तरा त्वां मां हरिः।

(यहाँ तुम्हारे और मेरे बीच में हरि है।)

इस अर्थ में 'तव' और 'मम' के स्थान में 'त्वां' एवं 'मां' का प्रयोग हुआ है।

- अन्तरेण हरिं न सुखम्। (हरि के बिना सुख नहीं।)
- गङ्गां यमुनां चान्तरा प्रयागः। (गंगा और यमुना के बीच में प्रयाग है।)
- ज्ञानमन्तरेण न सुखम्। (ज्ञान के बिना सुख नहीं।)
- भवन्तमन्तरेण कीदृशोऽस्या अनुरागः। (आप सभी के बिना इसका कैसा अनुराग?)
- श्रमं विना न सिद्धिः। (श्रम के बिना सिद्धि नहीं।)

काल और मार्ग वाचक शब्द में अत्यन्त संयोग अर्थ में द्वितीया होती है। यहाँ अत्यन्तसंयोग का अर्थ है — निरन्तर संयोग। अत्यन्त संयोग किसके द्वारा इस जिज्ञासा में समझना चाहिए कि गुण, क्रिया और द्रव्य के साथ कालवाचक और मार्गवाचक शब्द में द्वितीया होती है। जैसे—

मासं कल्याणी।

(मासतक कल्याणयुक्त।)

यहाँ गुणवाचक 'कल्याण' शब्द के साथ कालवाचक 'मास' शब्द का अत्यन्त संयोग होने के मास में द्वितीया हुई है।

इसी प्रकार,

- क्रिया के साथ संयोग का उदाहरण — मासम् अधीते। (मासभर निरन्तर पढ़ता है।)
- द्रव्य के साथ संयोग का उदाहरण — मासं गुडधाना। (मास भर गुड़ और धानी उसके पास रहते हैं।)
- मार्गवाचक का गुण के साथ संयोग का उदाहरण — क्रोशं कुटिला नदी। (नदी कोशभर तक टेढ़ी है।)
- मार्गवाचक का क्रिया के साथ— क्रोशमधीते। (कोशभर तक पढ़ता है।)
- मार्गवाचक का द्रव्य के साथ— क्रोशं गिरिः। (एक कोशभर तक पर्वत है।)

इस प्रकार, इस लेख में कारक के स्वरूप, भेदों का नामोल्लेख करते हुए कर्ता, सम्बोधन एवं कर्म कारक की परिभाषा, उनसे सम्बन्धित विभक्ति एवं वाक्यों में उनके प्रयोग का वर्णन किया गया है। इसी शृंखला के अग्रिम लेखों में करण, सम्प्रदान आदि कारकों की चर्चा की जाएगी।

अनुवाद

1. शिवः सृष्टिकर्ता संहारकर्ता च।
(शिव सृष्टिकर्ता एवं संहारकर्ता हैं।)
2. राजेशः कार्यालयं गत्वा कार्यं करोति।
(राजेश कार्यालय जाकर कार्य करता है।)
3. परिश्रमं विना फलं न प्राप्नोति।
(परिश्रम के बिना फल प्राप्त नहीं होता है।)
4. भारतं निकषा नेपालदेशोऽस्ति।
(भारत के पास नेपाल देश है।)
5. मूषकः महानसम् अन्नं मुष्णाति।
(मूषक रसोईघर से अन्न चुराता है।)
6. कर्णं याचते कुण्डलम्।
(कर्ण से कुण्डल माँगता है।)

- | | |
|---|---|
| 7. सहस्रं जयति महेशम् ।
(महेश से हजार रुपये जीतता है ।) | 12. गोपाः कृष्णं परितः क्रीडन्ति ।
(गोपा कृष्ण के सभी ओर खेलते हैं ।) |
| 8. क्रोशं विद्यालयः ।
(एक कोश भर विद्यालय है ।) | 13. सुशीलः मासं प्रयागे आस्ते ।
(सुशील मास भर प्रयाग में रहता है ।) |
| 9. वृद्धा आसंदिकाम् अधितिष्ठति ।
(वृद्धा कुर्सी पर बैठती है ।) | 14. भो रोहिणी! अन्तरा त्वां मां मित्रता ।
(हे रोहिणी! तुम्हारे और मेरे बीच में मित्रता है ।) |
| 10. रत्नावली तुलसीदासं धर्मं भाषते ।
(रत्नावली तुलसीदास को धर्म का उपदेश देती है ।) | 15. स्वाध्यायान्तरेण न ज्ञानम् ।
(स्वाध्याय के बिना ज्ञान नहीं ।) |
| 11. बालकः ग्रामम् अजां रज्जुना कर्षति ।
(बालक गाँव में बकरी को रस्सी से खींचता है ।) | |